विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

रूपम कुमारी, वर्ग -दशम्, विषय- हिंदी

दिनांक- 3 सितंबर 2020

Based on NCERT pattern

// अध्ययन -सामग्री //

सुप्रभात बच्चों,

विश्वास है कि कल की कक्षा में दी गई सामग्री का आपने मनोयोग से अध्ययन किया होगा ।

अब तक आपने पढ़ा कि, भारत को स्वतंत्र मिलने के बाद इंग्लैंड की महारानी भारत दौरे पर आने वाली थी ।

उनकी आने की जोरों -शोरों से तैयारी चल रही थी। आलम यह था कि सिर्फ उनका ही गुणगान नहीं बल्कि उनके नौकरों के गुणगान से हमारे अखबार भरे रहते थे । हमारी पत्रकारिता की यह दशा थी ।

यहां तक कि इंग्लैंड के खबरों के कतरन हमारे अखबारों के अगले दिन ही चिपकी नजर आती । तो यह आपने पत्रकारिता की गुलामी के बारे में जाना ।
महारानी कौन से कपड़े पहन कर आ रही हैं, उनके साथ आने वाला दल किस तरह का होगा- सारी चीजों की चर्चा विस्तारपूर्वक अखबार में रोज होती ।

दिल्ली की सारी सड़कें जो अभी तक बदहाल थीं, उनको दुरस्त कर दिया गया । यू कहें, कि सड़कें फिर से जवान हो गई थीं । देश की जनता के लिए नहीं इंग्लैंड की महारानी के लिए और खेद की बात यह थी कि हमने कुछ ही वर्ष पूर्व अंग्रेजों से अपनी स्वतंत्रता को छीना था , लेकिन सच्चे अर्थों में हमने अभी भी स्वतंत्रता नहीं पाई थी और हम अंग्रेजों की मानसिक गुलामी को बखूबी कबूल कर चुके थे । और ,इसका सबसे बड़ा उदाहरण था एलिजाबेथ के आने की तैयारी ।

पाठ के अनुसार सबसे बड़ी समस्या यह थी कि जॉर्ज पंचम की जो मूर्ति लगी हुई थीं , उसके नाक गायब थे । अब उनकी नाक को

कहां से लगाया जाए यह बड़ी समस्या बनी हुई थी ।

रानी आए और नाक ना हो !

अब आगे... *(Page number-12)*

दी गई सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और समझें ।

उच्च स्तर पर मशवरे हुए, दिमाग खरोंचे गए और यह तय किया गया कि हर हालत में इस नाक का होना बहुत ज़रूरी है। यह तय होते ही एक मूर्तिकार को हुक्म दिया गया कि वह फ़ौरन दिल्ली में हाज़िर हो।

मूर्तिकार यों तो कलाकार था पर ज़रा पैसे से लाचार था। आते ही, उसने हुक्कामों के चेहरे देखे, अजीब परेशानी थी उन चेहरों पर, कुछ लटके, कुछ उदास और कुछ बदहवास थे। उनकी हालत देखकर लाचार कलाकार की आँखों में आसूँ आ गए तभी एक आवाज़ सुनाई दी, "मूर्तिकार! जॉर्ज पंचम की नाक लगानी है!"

मूर्तिकार ने सुना और जवाब दिया, "नाक लग जाएगी। पर मुझे यह मालूम होना चाहिए कि यह लाट कब और कहाँ बनी थी। इस लाट के लिए पत्थर कहाँ से लाया गया था?"

सब हुक्कामों ने एक दूसरे की तरफ़ ताका...एक की नज़र ने दूसरे से कहा कि यह बताने की जिम्मेदारी तुम्हारी है। खैर, मसला हल हुआ। एक क्लर्क को फोन किया गया और इस बात की पूरी छानबीन करने का काम सौंप दिया गया।...पुरातत्व विभाग की फाइलों के पेट चीरे गए पर कुछ भी पता नहीं चला। क्लर्क ने लौटकर कमेटी के सामने काँपते हुए बयान किया, "सर! मेरी खता माफ़ हो, फ़ाइलें सब कुछ हज़म कर चुकी हैं।"